

करण शिवानी (डी बी डब्ल्यू 327)

उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के सिंचित दशा में अगेती बुआई के लिए
गेहूँ की जैवपोषित किस्म

पंजाब हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिवीजन को छोड़कर)
और पश्चिमी उत्तरप्रदेश (झांसी डिवीजन को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर
(जम्मू और कठुआ जिले), हिमाचल प्रदेश (ऊना जिला और पांवटा घाटी)
और उत्तराखंड (तराई क्षेत्र)



संकलन एवं सम्पादन

चन्द्रनाथ मिश्र, हनीफ खान, सतीश कुमार, अमित कुमार शर्मा, ओम प्रकाश,
के गोपाल रेड्डी, उमेश कांबले, भूदेव सिंह त्यागी, ज्ञानेन्द्र सिंह एवं ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह

जलवायू एवं क्षेत्र उपयोगिता

भा.कृ.अनु.प.- भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा विकसित गेहूँ की किस्म करण शिवानी (डी बी डब्ल्यू 327) को भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के सिंचित दशा में अगेती बुआई वाली खेती के लिए अनुशंसित किया गया है। किस्मों की विमोचन और अधिसूचना के लिए केंद्रीय उप-समिति', द्वारा एस.ओ. 8(ई) दिनांक 24 दिसंबर, 2021 के माध्यम से इस किस्म को पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिवीजन को छोड़कर) और पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी डिवीजन को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर (जम्मू और कटुआ जिले), हिमाचल प्रदेश (ऊना जिला और पांवटा घाटी) और उत्तराखंड (तराई क्षेत्र) के लिए अधिसूचित किया गया है।

डी बी डब्ल्यू 327 की उत्पादन विशेषताएं

- अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना गेहूँ के अगेती उच्च उपज क्षमता परीक्षणों में इस किस्म की औसत उपज 79.4 क्विंटल/हेक्टेयर पायी गयी है, जो की एच डी 2967 से 35.3%, एवं एच डी 3086 से 13.6% अधिक है।
- उत्पादन परीक्षणों के तहत इस किस्म द्वारा 87.7 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की अधिकतम पैदावार क्षमता दर्ज की गयी है।
- इस किस्म की पूरे जोन में पैदावार की अच्छी स्थिरता पायी गयी है और अधिक उर्वरकों और वृद्धि नियंत्रकों के प्रयोग के लिए अच्छे परिणाम दर्शाए हैं।
- यह किस्म उच्च तापमान एवं सूखे के प्रति अवरोधी पायी गयी है।



औसत उपज क्विंटल प्रति हेक्टेयर- डी बी डब्ल्यू 327

रोग प्रतिरोधिता

- यह किस्म पीला व भूरा रतुआ की सभी प्रमुख रोगजनक प्रकारों के लिए प्रतिरोधक पायी गयी है।
- इसके अलावा डी बी डब्ल्यू 327 में करनाल बंट रोग के प्रति अन्य किस्मों की तुलना में अधिक रोगरोधिता पायी गई है।

दानों की गुणवत्ता

डी बी डब्ल्यू 327 के दानों में उच्च लौह (39.4 पीपीएम) तथा जिंक (40.6 पीपीएम) की मात्रा, अच्छा दानों का रूप स्कोर (6.4) चपाती स्कोर (7.67), अधिक गीला व सूखा ग्लूटन मात्रा (35.5% और 11.3%) और बिस्कुट फैलाव गुणांक 6.7 सेमी है एवं अच्छा ब्रेड गुणवत्ता स्कोर (6.58/10.0) होने के कारण यह किस्म गेहूँ के कई उत्पादों के लिए एक बहुत उपयुक्त है।

डी बी डब्ल्यू 327 (करण शिवानी) किस्म की विशेषताएं

विशेषता	अंतरण	औसत
बाली निकलने की अवधि (दिनों में)	97-98	98
पकने की अवधि (दिनों में)	153-156	155
पौधो की ऊंचाई (सेमी)	95-101	98
1000 दानों का वजन (ग्राम)	47-48	48



डी बी डब्ल्यू 327 (करण शिवानी) के उत्पादन हेतु कृषि पद्धतियों का पैकेज

1. जलवायु एवं क्षेत्र की उपयुक्तता

यह प्रजाति उत्तर पश्चिमी भारत के मैदानी क्षेत्र जिसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिवीजन को छोड़कर) और पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी डिवीजन को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर (जम्मू और कठुआ जिला), हिमाचल प्रदेश (ऊना जिले और पांवटा घाटी) और उत्तराखंड (तराई क्षेत्र) शामिल है अगोती बुवाई सिंचित क्षेत्रों में उच्च उर्वरकता के साथ कर सकते हैं।

2. भूमि का चुनाव एवं तैयारी

समतल उपजाऊ खेत का चुनाव करके, जुताई पूर्व सिंचाई के बाद उपयुक्त नमी होने पर खेत की तैयारी के लिए डिस्क हैरो, टिलर और भूमि समतल करने वाले यंत्र के साथ जुताई करके खेत को अच्छी तरह तैयार कर लेना चाहिए।

3. बीज उपचार

गेहूँ के कंडुवा रोग से बचने के लिए वीटावैक्स (कार्बोक्सिन 37.5% थीरम 37.5%)/2-3 ग्राम /किग्रा बीज को उपचारित करना चाहिए।

4. बुआई का समय

20 अक्टूबर - 5 नवंबर

5. बीज दर और अंतराल

100 किग्रा बीज / हेक्टर। पंक्तियों के बीच 20 सेमी की दूरी के साथ बुवाई करना चाहिए।

6. उर्वरकों की मात्रा एवं उपयोग का समय

उर्वरकों का उपयोग मिट्टी परीक्षण पर आधारित होना चाहिए। उच्च उर्वरता वाली भूमि के लिए - एन: 150, पी: 60, के: 40 किलोग्राम/हेक्टेयर। फास्फोरस और पोटैश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन 1/2 मात्रा का भाग बीजाई के समय तथा नत्रजन की 1/4 मात्रा का भाग पहली सिंचाई के बाद तथा शेष मात्रा दूसरी सिंचाई के बाद देनी चाहिए। किस्म की पूर्ण क्षमता को प्राप्त करने के लिए, 150% एनपीके और वृद्धि नियंत्रकों के साथ 15 टन/ हेक्टेयर देशी खाद के प्रयोग की सिफारिश की जाती है।

7. खरपतवार नियंत्रण

- पेंडिमथेलिन नामक अंकुरण-पूर्व खरपतवारनाशी 600 ग्राम प्रति एकड़ दर से बीजाई के 1-3 दिनों के अन्दर प्रयोग करना चाहिए।
- चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 2,4-डी नामक दवा की 200 ग्राम/एकड़ या

मेट्सल्फुरोन 1.6 ग्राम/एकड़ या कारफेंट्राजोन 8 ग्राम/एकड़ नामक दवा को 120 लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव किया जा सकता है ।

- संकरी पत्ती या घासों के नियंत्रण के लिए क्लोडिनाफोप 24 ग्राम या फेनोक्षाप्रोप 40 ग्राम/एकड़ स्ल्फोस्ल्फुरोन की 13 ग्राम प्रति एकड़ मात्रा का प्रयोग करना चाहिए ।
- मिश्रित खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 2,4-डी या मेट्सल्फुरोन को स्ल्फोस्ल्फुरोन या आईसोप्रोटुरोन के साथ बुआई के 30-35 दिन बाद मिट्टी में पर्याप्त नमी की अवस्था पर अनुक्रमिक छिड़काव किया जाना चाहिए ।

8. वृद्धि नियंत्रक

- अगेती बुवाई व 150% एनपीके के प्रयोग पर वृद्धि नियंत्रकों क्लोरमाक्वेट क्लोराइड (CCC) / 0.2% टेबुकोनाजोल 250 ईसी / 0.1% का दो बार छिड़काव (पहले नोड पर और फ्लैग लीफ) करने से तना मजबूत होता है ।
- वृद्धि नियंत्रकों की 200 लीटर पानी में 400 मिलीलीटर क्लोरमाक्वेट क्लोराइड और 200 मिलीलीटर टेबुकोनाजोल (वाणिज्यिक उत्पाद मात्रा टैंक मिक्स) प्रति एकड़ मात्रा का प्रयोग दो बार करें ।

9. रोग एवं कीट नियंत्रण

- माहू या चेपा नामक कीट के नियंत्रण के लिए इमिडाकलोपरिड 17.8 SL की 40 मिली / एकड़ मात्रा का छिड़काव करना चाहिए ।
- दीमक के प्रभावी नियंत्रण के लिए खेत की तैयारी के दौरान रेत के साथ फिप्रोनिल 0.3 जीआर / 10 किलो प्रति एकड़ की सिफारिश की जाती है ।

10 सिंचाई

फसल में सामान्यतः 5 से 6 सिंचाई की आवश्यकता होती है । जिसमें पहली सिंचाई बुआई के 20-25 दिन बाद तथा उसके बाद 20-25 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए ।

11 कटाई

परिपक्वता अवस्था में गेहूँ की बालियाँ पकने के उपरांत फसल की कटाई करें तथा भंडारण से पहले अनाज को अच्छी तरह से सुखाया जाना चाहिए ।

12. अनुमानित उपज किस्म की उपज 31.76 कु. प्रति एकड़

13. उत्पादन क्षमता 35.08 कु. प्रति एकड़ ।

डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल, 132001 भारत



किसान सहायता नम्बर (टोल फ्री)

1800 180 1891

वेबसाइट : www.iiwbr.org



एक कदम, एक कदम
किसानों का समर्थन
एक कदम, एक कदम

Agri-research with a human touch